बी·ए·भाग-3
हिन्दी प्रतिष्ठा
पेपर - 8
'संत कबीर दास'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी -विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव,बक्सर

"नैया बिच नदिया डूबति जाय।
मुझको तूँ क्या ढूँढ़े बंदे मैं तो तेरे पास में।"

मसि कागज छुयौ नहीं, कलम गहौ नहि हाथ ॥

तुम जिन जानो गीत है, यह निज ब्रह्म - विचार।

मैं कहता हूँ आखिन देखी, तू कहता कागद की लेखी।

हरि जननी मैं बालक तोरा।

"सतगुरु हमसूँ रीझ कर, कहा एक प्रसंग।
बादर बरसा प्रेम का भींजी गया सब अंग॥"

जे तूँ बाभन बभनीं जाया। तो आन बाट होइ काहे न आया

हरि मोरा पिउ मैं हरि की बहुरिया।

हमनं है इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या?

साईं के सब जीव हैं कीरी कुंजर दोय।

रस गगन गुफा अजर झरै।

माया महा ठगनी हम जानी।

जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।

मोरि चुनरी में परि गयो दाग पिया।

मेरा तेरा मनुआ कैसे एक होई रे।

नैना अंतरि आव तू ज्यूं तो नैन झंपेऊँ
पलकों की चिक डारिके, पिया को लिया रिझाय।

भीजे चुनरिया प्रेम रस बूँदन।

गुरु मोहि घुंटिया अजर पियाई।

दुलहिन गावहु मंगल चारु।
हमरे घर आये राजा राम भरतार॥

पीछे लागा जाई था, लोक वेद के साथि।
आगे थे सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि।

घूँघट के पट खोल बहुरिया।

सपने में साँई मिले, सोवत लिये जगाय।

संतो आई ज्ञान की आंधी।

पूजा-सेवा-नेम-व्रत गुड़ियन का-सा खेल ।

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय ।
तरसै बिन बालम मोर जिया ॥

मन मेरी सुई, तन तेरा धागा ।
खेचरजी के चरण पर नामा सिंपी लागा ॥
संत नामदेव

सुफल जन्म मोको गुरु कीनो ।
दुख बिसार सुख अन्तर कीना ॥
ज्ञान दान मोको गुरु दीना ।
राम नाम बिन जीवन हीना ॥
संत नामदेव ।

दसरथनंद राजा रामचन्द्र ।
प्रणवै नामातत्व रस अमृत पीजें ॥
संत नामदेव

हिन्दू पूजै देहरा, मुसलमान मसीद
नामा सेविया जहँ देहरा न मसीद ।
संतनामदेव

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमरॉव